नई विश्व व्यवस्था में गुटनिरपेक्ष आन्देलन : प्रासंगिकता एवं औचित्य

डॉ. विनोद कुमार
विस्तार व्याख्याता
राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय
बहादुरगढ़, झज्जर

संक्षेपिका: *इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य यह स्पष्ट करा है कि शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद बदलती हुई विश्व व्यवस्था में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की क्या प्रासंगिकता है? तथा बदलते हुए विश्व परिवेश में किन बुनियादी मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करके समतामूलक विश्व व्यवस्था की स्थापना की जा सकती है?*

17वीं शताब्दी में यूरोप में संप्रभुतासंपन्न राष्ट्रीय राज्यों के उदय के पश्चात से लेकर लगातार महाशक्तियों के प्रभुत्व के विरूद्ध छोटे और कमजोर देशों के 350 वर्षों के संघर्ष के उपरान्त द्वितीय विश्व युद्ध के तुरन्त बाद गुटनिरपेक्षता का एक विदेश नीति तथा नवोदित राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले संगठन के रूप में उत्पति हुई। अतः विश्व चाहे एकध्रुवीय हो, द्विध्रुवीय अथवा बहुध्रुवीय हो, छोटे एवं कमजोर देशों की विदेश नीति तथा आन्दोलन के रूप में इसकी वैधता एवं प्रासंगिकता निश्चित रूप से बनी रहने वाली है। अर्थात् जब तक संप्रभुतासंपन्न राष्ट्रीय–राज्य प्रणाली रहेगी तब तक गुटनिरपेक्षता की नीति एवं गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिकता बनी रहेगी।

प्रमुख शब्दावलियां: गुटनिरपेक्षता, राष्ट्र–राज्य व्यवस्था, एकध्रुवीयता, द्विध्रुवीयता, बहुध्रुवीयता, बहुपक्षीय, संरक्षणवाद, विश्व व्यवस्था।

उपकल्पनाएँ:

- शीतयुद्धोत्तर युग में आर्थिक एवं सामरिक संदर्भों में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन पहले से अधिक प्रासंगिक है।
- बहुध्रुवीय विश्व की स्थापना के लिए यह संगठन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

- नई विश्व व्यवस्था में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन गरीबी, अशिक्षा, कुपोषण, एड्स, आतंकवाद एवं पर्यावरण से जुड़ी हुई समस्याओं से निपटने के लिए विकसित एवं विकासशील देशों के साथ मिलकर काम कर सकता है।

प्रविधि : इस शोध पत्र को पूर्ण करने के लिए ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन पद्धतियों का प्रयोग किया है तथा प्रमुख रूप से द्वितीय स्रोतों जैसे शोध पत्र, पुस्तकें, ब्लॉग्स, समाचार पत्र तथा पत्रिकाओं का प्रयोग किया गया है।

परिचय

1990 के दशक के बाद बदले वैश्विक परिप्रेक्ष्य और नई विश्व–व्यवस्था के सन्दर्भ में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिकता पर प्रश्न–चिन्ह लगाये जा रहे हैं और कहा जा रहा है कि गुटनिरपेक्षता शीतयुद्ध की देन थी और 1990 के दशक के बाद शीतयुद्ध का दौर समाप्त हो चुका है तो इसकी क्या प्रासंगिकता है?. जब गुट ही नहीं रहे तो गुटनिरपेक्षता किस काम की? वर्तमान समय में कहा जा रहा है कि वर्तमान दौर में वैश्विक परिदृश्य पर कोई भी महाशक्ति दूसरी महाशक्ति को शत्रु के रूप में नहीं देखती। सभी शक्तियों के मध्य एक दूसरे के प्रति सौहार्दपूर्ण सम्बंध हैं। अमेरिका और रूस मिलकर एक अन्तरिक्ष स्टेशन का संचालन कर रहे हैं और नाभिकीय उर्जा पर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को उन्होंने नया आयाम दिया है अमेरिका और चीन के बीच लगभग 300 अरब डालर का व्यापार है। रूस वर्तमान समय में पश्चिमी यूरोप, चीन और जापान के लिए उर्जा के प्रमुख आपूर्तिकर्ता के रूप में उभरा है ऐसे में यह सवाल उठता है कि आखिर किस के विरूद्ध गुटनिरपेक्ष देश अपनी गुटनिरपेक्षता प्रदर्शित करेंगे?

परन्तु बदलते हुए अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश में गुटनिरपेक्षता की नीति एवं आंदोलन पहले से अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। यह सही है कि आज वैश्वीकरण के दौर में वैश्विक शक्तियां कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य कर रही हैं और कोई भी राष्ट्र वर्तमान वैश्विक व्यवस्था से बाहर नहीं रह सकता।

परन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि यह अप्रासंगिक हो चुका है वैश्विक स्तर पर नए समीकरण बनने बिगड़ने के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय संबन्धों के स्वभाव में निश्चित रूप

से परिवर्तन आता है और इसका अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति संरचना पर नकारात्मक या सकारत्मक प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है गुटनिरपेक्ष आन्दोलन भी इसका अपवाद नहीं है गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का न तो लक्ष्य बदला है और न ही सार्थकता कम हुई है जिस प्रकार से दुनियां में युद्ध और संघर्ष चल रहे हैं उनको देखते हुए इस आन्दोलन को पहले की अपेक्षा और अधिक सक्रिय करने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में निम्नलिखित बिन्दुओं या बुनियादी मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

राजनीतिक प्रासंगिकता

शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद अनेक विद्वानों ने नई विश्व व्यवस्था में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की राजनीतिक प्रासंगिकता के संदर्भ में अपने तर्क प्रस्तुत किए इनमें से प्रमुख हैं –

उभरता हुआ एकध्रुवीयवाद तथा राष्ट्र राज्य प्रणाली का पतन

आज सबसे महत्वपूर्ण चिन्ता का विषय, जिससे तृतीय विश्व प्रभावित हो रहा है वह है राष्ट्र–राज्य व्यवस्था का विघटन एवं एकध्रुवीयता का बढ़ता प्रभाव। चैकोस्लवाकिया, इथोपिया, भूतपूर्व सोवियत संघ तथा युगोस्लाविया के उदाहरण इस संदर्भ में देखे जा सकते हैं वर्तमान समय में पाश्चात्य जगत तृतीय विश्व के देशों की राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता की रक्षा, आर्थिक समृद्धि, मानवाधिकार, लोकतन्त्र तथा स्थाई सरकार के नाम पर हस्तक्षेप कर रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्रों की प्रभुसत्ता खतरे में पड़ती जा रही है। **रजनी कोठारी** के अनुसार संपूर्ण विश्व में नया राजनीतिक, सैनिक चिन्तन और नियोजन पाश्चात्य जगत ही करता आया है चाहे वे पूर्व सोवियत संघ के गणराज्यों का मामला हो यूगोस्लाविया हो, इस्लामिक बहुराष्ट्रीयता के दावे हों, इजरायल–फिलस्तीनी टकराव हो, दक्षिण अफ्रिका का मामला हो या फिर चीन की विस्तारवादी महत्वाकांक्षाएं हों हर क्षेत्र में पैक्स अमेरिकाना की प्रक्रिया को देखा जा सकता है। इस प्रक्रिया को लोकतन्त्र के नाम पर वैधता दी जा रही है परन्तु यह लोकतन्त्र न तो बहुध्रुवीय है न बहुपक्षीय है और न ही बहुलतावादी सभ्यतामूलक विचार का समर्थक, यह तो एक युद्धरत लोकतन्त्र है इस प्रक्रिया से विश्व शक्ति संतुलन असंतुलित हो गया है इस लिए **प्रफुल्ल बिदवई** जैसे विद्वानों का मानना है कि भारत सहित तृतीय विश्व के देशों का हित एकध्रुवीय विश्व में नहीं बल्कि बहुध्रुवीय विश्व में है क्योंकि

न्यायसंगत कारोबार, विकास, विश्व आर्थिक समदृष्टि और सुरक्षा के मुद्दों पर स्वतन्त्र रूप से कार्यवाही की ज्यादा गुंजाइश पैदा करने के लिए यही एक रास्ता है। अतः गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों के इस मंच से विविध–संस्कृतियों और विभिन्न महाद्वीपों वाले राष्ट्रों की आवाज को बुलंद करना होगा। केवल तभी बहुध्रुवीय विश्व की स्थापना की जा सकती है। इस बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में सभी विकासशील राष्ट्रों की एकता और अखण्डता की सुरक्षा सुनिश्चित होगी और राष्ट्र–राज्य व्यवस्था सुदृढ़ होगी।

संयुक्त राष्ट्र संघ का लोकतान्त्रिकरण

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के बारे में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि अपने आरम्भ से ही यह संयुक्त राष्ट्र को मजबूत करने के लिए उल्लेखनीय प्रयास करता रहा है तथा इसकी प्रतिबद्धता संयुक्त राष्ट्र संघ की सर्वोच्चता के प्रति रही है। परन्तु वर्तमान समय में संयुक्त राष्ट्र और इसके प्रमुख अभिकारणों के उत्तरोत्तर दरकिनार किए जाने की आधुनिक प्रवृति हमारे लिए गहन चिन्ता का विषय है यदि यह संस्था कमजोर पड़ती है तो अपरिहार्य रूप से कमजोर देश दरकिनार हो जाएंगें तथा अधिक शक्तिशाली देशों के बीच सत्ता और प्रभाव को लेकर झगड़े बढेंगें अतः संयुक्त राष्ट्र संघ को संरचनात्मक और प्रक्रियात्मक तौर पर पुनर्गठित किया जाना अति आवश्यक है ताकि इस संगठन के माध्यम से सभी देशों का प्रतिनिधित्व सुनिश्ति किया जा सके तथा समानता पर आधारित विश्व व्यवस्था की स्थापना हो सके।

गुटनिरपेक्षता, विदेश नीति के एक सिद्धान्त के रूप में

प्रभुसत्तासंपन्न राज्य–व्यवस्था के जन्म से प्रभुसत्ता, स्वतंत्रता और समानता को अन्तर्राष्ट्रीय संबन्धों का आधार माना गया है। परंतु वास्तव में पिछले तीन सौ वर्षों के दौरान इन आधारभूत तत्वों की काफी उपेक्षा की गई है। और वर्तमान समय में भी ऐसा ही होता आ रहा है। अतः गुटनिरपेक्षता को विदेश नीति के सिद्धान्त के रूप में स्वीकार किया जाना जरूरी है **एम.एस. राजन** का मानना है कि वर्तमान एक–ध्रुवीय विश्व में दुनियां के अधिकांश देशों, विशेषकर तृतीय विश्व के देशों के लिए गुटनिरपेक्षता के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है साम्राज्यवाद, शक्ति संतुलन, तटस्थता, सामूहिक सुरक्षा तथा गठबन्धनों की नीतियां किसी न किसी कारण से दुनियां के अधिकांश राष्ट्रों के हितों को संवर्धित करने के लिए उपयुक्त है

जे. **बन्धोपाध्याय** का मानना है कि वर्गीय चरित्र एवं कट्टर विचारधारा पर आधारित विदेश नीति की अपेक्षा वैज्ञानिक समाजवाद पर आधारित विदेश नीति ही भारत सहित तृतीय विश्व के देशों के दीर्घकालीन हितों की रक्षा कर सकती है और गुटनिरपेक्षता इसके लिए स्वोत्तम साधन है।

आर्थिक प्रासंगिकता

एक अन्य प्राथमिकता वाला क्षेत्र, अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग है। यद्यपि गुटनिरपेक्ष देश अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के ढाँचे के पुनर्निर्माण पर जोर देते रहे हैं ताकि विकासशील और विकसित राष्ट्र इसमें बिना किसी भेदभाव के प्रवेश कर सकें। परन्तु न्यायसंगत अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तथा टिकाऊ विकास की दिशा में कोई संतोषजनक परिणाम नहीं आया है।

कर्ज की समस्या

विकासशील देशों के समक्ष अभी भी सबसे बड़ी समस्या गरीबी दूर करने की है विकासशील देश एक ओर तो भारी कर्ज से डुबे पड़े हैं तथा दूसरी ओर विकसित देशों की उन्नत प्रौद्योगिकी और बाजारों तक पहुँचने में अनेक समस्याएं उत्पन्न की जा रही हैं। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की उत्पति से लेकर आज तक यह समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है विकासशील देशों की आर्थिक प्रगति में कर्ज की भयावह स्थिति के कारण उत्पन्न रूकावटों को दूर करने के लिए बहुपक्षीय प्रयास किए जाने अति आवश्यक हैं नैम इसके लिए एक बेहतरीन मंच है।

असमान अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार

किसी भी मुक्त व्यापार व्यवस्था की बुनियादी शर्त यह है कि सभी पक्षों को बाजार में पहुँच का बराबर हक मिलना चाहिए, परन्तु विकसित देशों ने बड़ी ही चतुराई से गरीब देशों के बाजारों को हथिया लिया है और अपने बाजार तरह–तरह के नियम थोपकर उनके लिए बन्द कर दिये हैं। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने पूरी दूनिया को एक सूत्र में पिरोते हुए एक महाद्वीपीय गाँव के रूप में परिवर्तित कर दिया है यह भी तय है कि जो भी विकास करना है इस प्रक्रिया के भीतर रहकर ही किया जा सकता है बाहर रहकर नहीं। अतः विकासशील

देशों को ब्रिटेनवुड्स संस्थाओं के लोकतान्त्रिकरण एवं आर्थिक प्रणाली को न्यायसंगत बनाने के लिए एकजुट होना होगा।

कृषि का उदारीकरण एवं बढ़ता हुआ संरक्षणवाद

विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था लगभग पूरी तरह से कृषि या उससे संबन्धित उत्पादों पर आधारित है। इन देशों के अधिकांश लोगों को कृषि के माध्यम से सही रोजगार प्राप्त होता है विकसित देश विश्व व्यापार संगठन के माध्यम से इन देशों का यह आधार भी समाप्त करना चाहते हैं। सभ्यताओं के संघर्ष के वर्तमान युग में विकसित और विकासशील देशों के मध्य कृषि व्यापार का मुद्दा बुनियादी लड़ाई का रूप धारण करता जा रहा है। शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद अब तृतीय विश्व, दो गुटों की प्रतिस्पर्धा का फायदा उठाने की स्थिति में नहीं है। विकसित देशों के बाजारों का स्टेग्नेशन हो रहा है इसलिए विकसशील देशों पर अपने बाजार खोलने के लिए दबाव बनाया जा रहा है तो दूसरी ओर अपने बाजारों को अनेक प्रकार के मानदण्ड निर्धारित करके बन्द किया जा रहा है। इसका सर्वोत्तम विकल्प दक्षिण–दक्षिण व्यापार सहयोग है। समस्याएं है परन्तु पारस्परिक सहयोग एवं लाभ की संभावनाएं भी निश्चित रूप से विद्यमान हैं गुटनिरपेक्ष आन्दोलन इस प्रक्रिया को बढ़ाने का एक लाभकारी मंच सिद्ध हो सकता है।

सामरिक एवं मानवीय संदर्भों में प्रासंगिकता

वर्तमान समय में विश्व परिदृश्य पर उपस्थित प्रमुख समस्याएं है यथा– गरीबी, अशिक्षा, कुपोषण एड्स, आतंकवाद एवं पर्यावरणीय संकट मुख्यतः विकासशील देशों में ही संकेन्द्रित हो रहे हैं ऐसे में विकासशील देशों का एक मंच होने के कारण गुटनिरपेक्ष अन्दोलन की आवश्यकता अपेक्षाकृत अधिक बढ़ जाती है। क्योंकि गुटनिरपेक्ष आन्दोलन ही विकासशील देशों के समक्ष उपस्थित इन सारी समस्याओं के पिटारे हेतु, एक साझा समाधान प्रस्तुत कर सकता है।

वास्तव में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का मुख्य औचित्य केवल दो गुटों से समान दूरी बनाए रखना हीं था, बल्कि नव–उपनिवेशवाद के संकट को कम करते हुए स्वतन्त्र, निष्पक्ष, तर्कसंगत, अपने हितो को सुरक्षित करने वाले निर्णय लेने की विकासशील देशों की क्षमता को

प्रबल करना था; यह औचित्य आज भी बना हुआ है। तरह–तरह की विचारधाराओं, शासन पद्धतियों, विचित्र जीवन–शैलियों और यहाँ तक की एक–दूसरे के जानी दुश्मन राष्ट्रों का एक ही मंच पर नियमित मिलन विश्व समुदाय के रूपांतरण में अद्वितीय भूमिका निभा सकता है। जिस समय नेहरू, नासिर अैर टीटो ने इस आन्दोलन की नींव रखी थी, तब दुनिया सोवियत संघ और अमेरिका के दो गुटों में बंटी हुई थी । साथ ही दोनों प्रतिद्वंदी महाशक्तियां परमाणु शस्त्रों से लैस थी और इन देशों के नेताओं की जनता में आदर्श छवि थी। इस नैतिक शक्ति के आधार पर उन्होंने इतने बड़े संगठन को खड़ा किया। हालांकि उस समय भी महाशक्तियाँ अपने राष्ट्रीय स्वार्थों के अनुसार कार्य करती थी परन्तु उस समय इतनी आशा तो थी कि दुनिया के करोड़ों निष्पक्ष लोगों के विवेक का प्रतिनिधित्व करने वाली एक गुटनिरपेक्ष आवाज विश्व पटल पर गूंज रही है। परंतु आज स्थिति इसके विपरित है आज कोई भी विश्व विख्यात नेता गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में नही बचा है यदि 21वीं सदी के इस नए मोड़ पर कुछ दूरदृष्टि सम्पन्न देश इस आन्दोलन के सक्रिय संचालन के लिए आगे आएं तो वे विश्व राजनीति को एक नई दिशा प्रदान कर सकते हैं। यह ठीक है कि दुनिया अब दो ध्रुवीय नहीं रही, परन्तु यह एकध्रुवीयतावाद भी कब तक स्थापित रहेगा? यदि गुटनिरपेक्ष राष्ट्र अपने मतभेदों को भुलाकर शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व, न्याय, सुरक्षा और विकास के लिए मिलकर काम करें, तो आश्चर्य नहीं की आने वाले कुछ वर्षों में यह दुनिया एकध्रुवीय की अपेक्षा बहुध्रुवीय बन जाएगी। प्रत्येक महाद्वीप पर कई छोटे–मोटे ध्रुव काम करने लगेंगें। ऐसी स्थिति में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन दुनिया के लिए एक वरदान सिद्ध हो सकता है। आज भी ये राष्ट्र जब कुछ मुद्दों पर सर्वसम्मति का निर्माण कर सकते हैं तो वे इसी प्रक्रिया को आगे क्यों नहीं बढ़ा सकते हैं?

वैश्वीकरण के युग में विकासशील देशों के समक्ष नए अवसर

वर्तमान समय में कुछ दक्षिण के देश, विश्व के प्रमुख सामान और सेवाएँ आपूर्तिकर्ता एवं मांग के अन्तिम केन्द्रों के रूप में उभर रहे हैं आज दक्षिण एक अच्छी व्यापार प्रणाली विकसित कर सकता है। क्योंकि 1990–2001 के दौरान दक्षिण–दक्षिण व्यापार 10 प्रतिशत की वृद्धि दर से सालाना बढ़ा है जो कि विश्व व्यापार की वृद्धि दर का दो गुणा है। विकासशील देशों के कुल व्यापार का 43 प्रतिशत तथा विश्व व्यापार का 11 प्रतिशत व्यापार अब

दक्षिण–दक्षिण व्यापार के माध्यम से अगे बढ़ रहा है। चीन, भारत, ब्राजील, तथा मैक्सिकों उत्तर–दक्षिण संवाद को आगे बढ़ाने एवं विकासशील देशों की सहायता करने के लिए अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। भारत और ब्राजील हाल के वर्षों में विकासशील दुनिया के प्रमुख राष्ट्रों के रूप में उभरे हैं। चीन और रूस को मिलाकर ये ब्रिक्स नाम के उस समूह का हिस्सा हैं जिसकी अर्थव्यवस्था सबसे तीव्र गति से आगे बढ़ रही है और कुछ दशकों में सबसे शक्तिशाली बनने की अपूर्व संभावनाएं मौजूद हैं जनवरी 2007 में एक जापानी शोधकर्ता ने अपनी उपकल्पनाओं के परिक्षण में पाया कि ब्रिक्स तथा अन्य पूर्वी एशियाई और मध्यपूर्व के दशों ने विश्व अर्थव्यवस्था को निश्चित रूप से प्रभावित किया है। कुछ अमेरिकी विद्वानों का मानना है कि अब वित्तीय केन्द्र विकसित देशों की अपेक्षा विकासशील देशों की ओर स्थापित हो रहा है। हांगकांग और दुबई, न्यूयार्क और लंदन के साथ प्रतियोगिता कर रहे हैं तथा अन्तर्राष्ट्रीय पूंजी बाज़ार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं भारत और चीन विश्व पूंजीनिवेश को आकर्षित करने वाले प्रमुख केन्द्रों के रूप में उभरे हैं। पिछले वर्षों में रूस ने भी अपनी अर्थव्यवस्था में गुणात्मक सुधार किया है और अब वह विश्व की 7वीं आर्थिक महाशक्ति बन गया है। इससे पहले जब सोवियत संघ का विघटन हुआ था तो इसकी अर्थव्यवस्था बिल्कुल हाशिए पर पहुँच गई थी। ब्राजील–अमेरिका, जापान तथा यूरोप का व्यापार सहयोग आर्थिक विकास दर के मुकाबले दो गुणा आगे बढ़ा है। आई.एम.एफ. की ताजा रिपोर्ट के अनुसार 2007 में विकसित देशों की आर्थिक विकास की गति विकासशील देशों के मुकाबले बहुत कम है क्योंकि शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद इन देशों ने अपनी अर्थव्यवस्था में गुणात्मक सुधार किए हैं जिसके कारण धीरे–धीरे इनका विकास हुआ है तथा 21वी शताब्दी में अपने आपको स्थापित कर पाए हैं। पाश्चात्य विद्वान इस बात से आश्चर्यचकित हैं कि किस प्रकार ये देश प्रमुख आर्थिक केन्द्रों के रूप में उभर पाए? उनके अनुसार अब एक नई द्विध्रुवीय व्यवस्था स्थापित हो रही है जिसमें एक ओर हताश पाश्चात्य जगत तथा दूसरी ओर उभरते हुए विकासशील देश हैं इस विचार में पूर्ण सच्चाई न हो परन्तु कुछ सीमा तक अवश्य सत्य प्रतीत होता है क्योंकि ये देश विकास के अनेक विकल्प तलाश रहे हैं इब्सा नाम से चर्चित हो रहे एशिया, दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका महाद्वीप के तीन देशों भारत, ब्राजील तथा दक्षिण–अफ्रीका आदि देशों के नए समूह की शुरूआत हुई है। 2004 में इन देशों ने 10 अरब डालर सालाना व्यापार का लक्ष्य रखा था जो अभी 6.5 अरब डालर से उपर पहुँच गया है

ब्राजील और भारत का वाणिज्यक संबंध 2000 से 2005 के बीच चार गुणा से भी ऊपर होकर 2.3 अरब डालर तक पहुँच गया है। भारत और ब्राजील विश्व व्यापार संगठन की वार्ता में कृषि प्रधान देशों के जी–20 समूह के प्रमुख सहभागी हैं, इस प्रकार तेजी से हो रहे परिवर्तन के कारण निर्णायक कदम उठाने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

अंत में हम कह सकते हैं कि शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की भूमिका में निश्चित रूप से कमी आई है विशेषकर राजनीतिक संदर्भों में। परन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि बदलते परिवेश में इस आन्दोलन ने अपनी प्रासंगिकता खो दी है। 'नैम' विकास, व्यापार, आतंकवाद, अपराध, मानवाधिकार और पर्यावरण जैसे मुद्दों पर सामूहिक राय कायम करने का मंच बन सकता है। ये सभी मुद्दे आज संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके सभी अभिकारणों के नेतृत्व में ग्लोबल एजेन्डे के हिस्से हैं। गुटनिरपेक्ष अन्दोलन विश्व व्यापार वार्ताओं में विकासशील देशों की एकजुट होने में सहायता कर सकता है सदस्य देशों की प्राकृतिक संपदा पर यदि ध्यान दिया जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि अगर अधिकांश देश अपनी अपार सम्पदा का समुचित उपयोग करें और पश्चिमी जगत तथा जी–7 के देशों की अपेक्षा पारस्परिक सहयोग के आधार पर आर्थिक विकास की रणनीति अपनाएं तो न केवल उनका विकास तेजी से होगा बल्कि आसान भी रहेगा। परन्तु ऐसा तभी संभव है जब इन देशों के आर्थिक व्यवस्था सम्बन्धी दृष्टिकोण स्पष्ट हों। अन्तर्राष्ट्रीय वित्त संस्थाओं के तौर–तरीके, कर्ज का बोझ और युद्ध तथा शान्ति जैसे मामलों में भी एकजुटता महत्वपूर्ण हो। द्विपक्षीय विवादों में सलाह और बीच–बचाव के लिए इस मंच की मदद ली जा सकती है। यह सत्य है कि नैम एक संगठित व्यापारिक इकाई के रूप में नहीं बदला जा सकता क्योंकि इस संदर्भ में अनेक रूकावटें एवं समस्याएं हैं परन्तु उनमें किसी तरह का समन्वय तो हो ही सकता है इस प्रकार यह आन्दोलन विश्व व्यवस्था का पूरक बनकर उसमें सार्थक योगदान दे सकेगा।

संदर्भ

1. पी.रत्नम, ''नॉन–अलाइन्मेंट इन द सेवन्टीज'', द *इंडिया क्वाटरली,* वा. XXX, नं. 1, जनवरी–मार्च, 1970.

2. ''नैम स्टेटमेंट्स टू द फोर्थ एचआरसी'', *नॉन अलाईंड वर्ल्ड,* वा. 27, नं. 31, मई 1, 2007.

3. ईस्तवान तारोसे, ''नीड फॉर नान–अलाइनमेंट इन ऑवर ग्लोबल वर्ल्ड'', दि नॉन अलाइन्ड मूवमेंट : टूडे एण्ड टूमारो'', *क्रोशियन ऑफ इटरनेशनल रिलेशनस रिव्यू,* वा. XI, नं. 40–41, 2005.

4. जॉन चेरियन, ''सक्सेफूल समीट'' *फ्रंटलाईन,* वा. 20, न., 6 मार्च, 2003.

5. के.सुब्रहमन्यम, ''रेलिवेंस ऑफ नॉन–अलाईनमेंट,'' *द ट्रिब्यून,* नई दिल्ली, 5 सितम्बर, 2006.

6. एम.एस. राजन, *गुटनिरपेक्षता : आन्दोलन एवं संभावनाएँ,* हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1991.

7. जय किशन शर्मा, ''एक नए संयुक्त राष्ट्र संघ की आवश्यकता'', *टाइम्स ऑफ इंडिया,* नई दिल्ली, 30 अप्रैल, 2004.

8. *यूएन न्यूज,* वॉ. 62, नं. 1, जनवरी, 2007.

9. ए.एस. नारंग, ''नैम इन दी न्यू मिलेनियमः चेलंजिज एण्ड इश्यूज'', प्रमिला श्रीवास्तव, (सं.) *नॉन–अलाइंड मूवमेंट : एक्सटेंडिंग फ्रन्टायर्स,* कनिष्क, नई दिल्ली, 2007.

10. रजनी कोठारी, ''जनता से डरते अभिजन और कमजोर होता राष्ट्र राज्य'', अभय कुमार दुबे (सं.) *भारत का भूमण्डलीकरण,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003.

11. प्रफुल्ल बिदवई'', प्रभुसत्ता का पतन,'', *सहारा समय,* नई दिल्ली, 7 जनवरी, 2006.

12. सी.पी. भांभरी, ''फारेन पलिसी फेसिज टफ् टैस्ट,'' *सहारा टाइम्स,* नई दिल्ली, 23 सितम्बर, 2006.

13. एम.एस. राजन, *स्टडिस ऑन नॉन–इलाईन्मेंट एण्ड द नान–अलाइंड मूवमेंट,* एबीसी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1986.

14. एम.एस. राजन, ''द नैम समिट् एण्ड नॉन–एलाईन्मेंट *वर्ल्ड फोकस,* वा. 24, नं. 3, मार्च 2003.

15. जयनतनुजा बन्धोपाध्याय, ''फ्रॉम नॉन–अलाइनमेंट टू प्रोइम्पीरियलिज्म : क्लास एण्ड फारेन पॉलिसी ऑफ इंडिया'', *द मार्क्सिस्ट,* वॉ. XIX, नं. 2, अप्रैल–जून, 2003.

16. समीन अमीन, बीयोन्ड यूएस हेजमनी? *एसेसिंग द प्रोस्पेक्ट्स फोर ए मल्टीपोलर वर्ल्ड,* जेड बुक्स, लंदन, 2006.

17. *नवभरत टाइम्स,* नई दिल्ली, 7 सितम्बर, 2006.

18. *हिन्दुस्तान,* नई दिल्ली, 8 सितम्बर, 2006

19. वांग यूरांग, ''राइज ऑफ डबलपिंग कन्ट्रीज एण्ड चेज ऑफ टाइम्स'', *फॉरेन अफेयर्स,* न. 87, स्पिरिंग, 2007.

20. अब्दुल्ल नेफे, ''इब्सा फोरम : द राइज ऑफ न्यू नान–अलाइनमेंट'' *इंडिया क्वटरली,* वॉ. LXI, नं. 1, जनवरी–मार्च, 2005.